सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष २०२१ का तृतीय अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इस अंक में प्रथम लेख के रूप में देवर्षि कलानाथ शास्त्री जी का 'प्रथम पुरुषार्थ :धर्म-परिभाषा और परिप्रेक्ष्य' लेख समाहित है तथा डॉ. प्रहलाद सहाय बुनकर का 'वैदिकर्षीणां परमात्मैकत्वचिन्तनं तद्विमर्शश्च' लेख है। इसी क्रम में महामण्डलेश्वर स्वामी ज्ञानेश्वर पुरी द्वारा 'अमोघ शिव कवच' लेख लिखा गया है। डॉ. वत्सला ने 'श्रीमद् भगवद्गीता और अवसादमुक्ति' लेख लिखा है। श्रीमती अंजना शर्मा के 'संस्कृत साहित्य के उन्नयन में महिलाओं का योगदान' लेख प्रस्तुत किया है। काव्यविधा में डॉ. ओमप्रकाश पारीक का 'पञ्चदलम्' भावानुभूतियों का रोचक प्रस्तुतीकरण करता है। अन्त में डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के 'राष्ट्रोपनिषत् प्रस्तावना शतकम्' के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्व हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

सम्पादक
डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा